बाल किलकारी

(बिहार बाल-भवन का मासिक अखबार)

अंक- 07 | वर्ष- 04 | नवम्बर-2017-जनवरी-2018 (संयुक्तांक) | मूल्य- ₹ 10/-

बाल-दिवस - 2017

14 नवम्बर , 2017 को किलकारी के स्थापना–दिवस पर लगभग एक हजार बच्चों की बाल झाँकी निकाली गयी। पटना के एस.के.मेमोरियल हॉल के परिसर से निकलने वाली उस झाँकी को पटना प्रमंडल के आयुक्त श्री आनंद किशोर एवं जिलाधिकारी श्री संजय अग्रवाल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। पटना के विभिन्न प्रमुख मार्गों से होते हुए यह भव्य झाँकी प्रेमचंद रंगशाला तक पहुँची। विभिन्न वेश–भूषा में, साइकिल पर सवार, स्केटिंग करते, नृत्य करते, बैंड बाजा बजाते, कराटे, ताइक्वांडो एवं जिमनास्टिक करते हुए बच्चों का प्रदर्शन देखने लायक था। साथ में छत्तीसगढ़ राज्य से आमंत्रित छऊ नृत्य दल ने दर्शकों का मन मोह लिया। किलकारी परिसर में, सांध्य कालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। इसमें बाल केन्द्र और किलकारी के बच्चों के रंगा–रंग कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर किलकारी 'श्री सम्मान' से युनिसेफ की निपुण गुप्ता, 'जागरूक अभिभावक सम्मान' से नसरीन आलम खान, 'किलकारी के कुशल प्रशिक्षक सम्मान' से कन्हैया एवं पवन व 'बाल सम्मान' से नेहा कुमारी को सम्मानित किया गया।

इण्टरनेशनल चिल्ड्रेन फिल्म फेस्टिवल

8 से 14 नवम्बर – 2017 तक हैदराबाद में इण्टरनेशनल चिल्ड्रेन फिल्म फेस्टिवल में किलकारी की तीन फिल्में 'मैं भी इन्सान हूँ' 'एहसास' और 'द प्राइसलेस फ्लावर' का चयन किया गया। इस फेस्टिवल में किलकारी के अक्षत आदर्श, प्रिंस, प्रवीण, इन्तिखाब अभिषेक, अमित और मृत्युंजय को जाने का मौका मिला, जहाँ उन्हें मिस्टर फ्रॉग , स्पूतनीक आदि के साथ कई फिल्मों को देखने का मौका मिला। किलकारी के बच्चों को इस फिल्म–महोत्सव में मुकेश खन्ना, यामी गौतम और श्रद्धा कपूर आदि चर्चित सिने कलाकारों के साथ बाल फिल्म देखने एवं बातचीत करने का मौका मिला।

उदय शंकर अन्तरराष्ट्रीय नृत्य महोत्सव - 2017

किलकारी एवं सुरांगन संस्था द्वारा प्रेमचंद रंगशाला में तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय उदय शंकर कोलकात्ता, बुद्धियंद्रीसिंगे, श्री लंका द्वारा उदयशंकर नृत्य एवं कैनेडियन डांस प्रस्तुत किया गया। किलकारी के प्रेक्षागृह में उदय शंकर के जीवन पर आधारित डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म दिखाई गयी। दिनांक 12 से 17 दिसम्बर, 2017 तक चलने वाले उस महोत्सव में नृत्य विधा के बच्चों ने पूरे उत्साह से भाग लिया।

फिल्म प्रशिक्षण कार्यशाला

किलकारी एवं फिल्म एण्ड टेलिविजन इन्स्टीच्यूट ऑफ इन्डिया, पुणे के सहयोग से बच्चों के लिए सात दिवसीय फिल्म प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। फिल्म विशेषज्ञ रीतेश तकसान्दे ने कार्यशाला के 73 बच्चों से 8 बाल फिल्मों का निर्माण कराया। बच्चे फिल्म निर्माण की विभिन्न तकनीकों से अवगत हुए। FTII के निदेशक भूपेन्द्र कैन्थोला ने फिल्म निर्माण प्रक्रिया को लेकर बच्चों से बातें की।

किलकारी लाल

प्यारे दोस्तो,

मन बड़ा खुश लग रहा है। पर इस खुशी की क्या वजह हो सकती है, जरा सोचो.....। अरे! हम नये साल में प्रवेश जो कर चुके हैं। सब कुछ नया–नया–सा लग रहा है न! चीजें वही पुरानी हैं, पर उनमें चमक नयी दिख रही है। चेहरे वही हैं, पर चेहरों पर मुस्कान नयी–सी है। इतना सारा नया दिखने के बाद क्या हमने कुछ नया सोचा है ? जरूर कुछ–न–कुछ सोचा ही होगा। मैंने खुद इस साल से डायरी लिखना शुरू किया है। अब मैंने तो अपनी कुछ शुरुआत कर दी, अब बारी तुम्हारी है..... क्या पता इस शुरुआत से हमारे जीवन में थोड़ा बदलाव आए, इससे हमारे माता–पिता को काफी खुशी हो । तब तो ऐसी शुरुआत हमें करनी ही चाहिए।

वैसे हमारे ऊपर पढ़ाई का कितना बोझ है न! सुबह होते ही स्कूल के लिए निकल जाना और शाम को थका–हारा घर को लौटना। उसके बाद भी आराम नहीं, खाना खाया और कोचिंग निकल पड़े। अरे भाई! हमारा दिमाग कोई मशीन थोड़े ही है। उसमें भी पढ़ाई के मामले में काफी दबाव रहता है माता–पिता का। शायद! इसी कारण हमारा दिमाग कुछ नया नहीं सोच पाता। लेकिन इसमें हमारी भी कुछ गलतियाँ छुपी होती हैं। अब टी॰ वी॰ पर डॉरी मान और मोटू–पतलू देखने से थोड़ी ही होगा। मोटू की तरह दिमाग की बत्ती भी जलानी पड़ेगी। ऐसे तो हम सभी कल्पनाओं के किंग हैं। बस! उन कल्पनाओं को पंख देने की जरूरत है। क्या पता वो कल्पनाएँ उड़ते–उड़ते किसी के पास जाएँ और उसके दिल को छू जाएँ।

क्योंकि हमारी कल्पनाओं में,
चमकते तारों के फूल हैं।
नटखट–भरी मस्तियों में हम,
हो गए मशगूल हैं।

वैसे दोस्तो ठंड बहुत है। कनकनी ने तो हालत खराब कर रखी है। रजाई में दुबकने के बाद बाहर निकलने का मन ही नहीं करता। ऐसे में आग पर सिकी गरम–गरम लिट्टी खाने का मज़ा ही कुछ और है। सुनते ही मुँह में पानी आ गया न! साथ ही आलू पकाकर खाने का तो अपना पुराना तरीका है।ये सारी चीजें हमें गाँव की याद दिला देती हैं। माँ भी धूप में बैठकर स्वेटर बुनती रहती थी, और हमलोग मस्तियों के जाल बुनते थे। कितना मज़ा आता था न! पर अब तो समय आ गया है, नये सोच के साथ नये सपने बुनने का। तो दोस्तो, हम अपने सोच को एक नयी उड़ान देंगे न!

सम्राट समीर

अर्थात्

कहानी

अर्थात्, अर्थात्, अर्थात्। मैं तो बस थक गया हूँ, इस अर्थात् से । "विनय चिल्लाया।" हाँ यार, मैं भी तंग आ गया हूँ। कहीं कल न्यू ईयर के दिन भी तो नहीं अर्थात् का रायता फैलेगा। " विश्वास भी उस राग में बोल पड़ा। सोसायटी में राहुल नया–नया आया था सो उसे इस अर्थात् के बारे में कुछ पता नहीं था। वह धीमे से बोला, "लेकिन दोस्तो ये 'अर्थात् ' है क्या ?" "मतलब थोड़ी देर में समझ जाओगे।" विश्वास बोला विनय ने उसे समझाते हुए कहा, "देखो राहुल हमारे हैप्पी क्लब का सबसे समझदार मेम्बर 'संस्कार' है। उसका पूरा नाम 'संस्कार राज आर्यन ' है। आज वह अपने मामा के यहाँ गया है। जैसे शराबी को शराब की लत होती है, वैसे ही संस्कार को 'अर्थात्' की लत है। " "मतलब ?" राहुल बोला । अब विश्वास उसे समझाता है, "देखो, वह हर बात में अकस्मात् ही संस्कार आ गया और बोला, " देखो दोस्तो मैं आ गया, अर्थात् मैं मामा के घर से लौट आया।" सभी उसे गौर से देखे जा रहे थे, लेकिन वो राहुल को देख रहा था और देखते हुए कहता है, " यह नया मेम्बर कौन है, अर्थात् नया लड़का ? " राहुल ने अपने आपको बताते हुए कहा, "मै राहुल अर्थात् सोसायटी और आपके क्लब का नया मेम्बर सब उसकी बात पर हँस पड़े। लेकिन संस्कार उसे तीखी नज़रों से देखे जा रहा था और कहने लगा, "तुम मेरा मज़ाक बना रहे हो, अर्थात् यू मेड माय फन (You made my fun)।" "नहीं – नहीं अर्थात् जी। मैं आपका मज़ाक नहीं उड़ा रहा तुम खुद ही अपना मज़ाक बना रहे हो।" राहुल ने उसे सीधे–सीधे कहा।" वो कैसे अर्थात् किस तरह!" संस्कार बोला। "वो इस तरह कि, तुम जो बार–बार यह अर्थात् बोल रहे हो, वही तुम्हारा मज़ाक बना रहा है। " राहुल बोला। इस वाक्–युद्ध को बीच में ही छोड़ते हुए संस्कार बाहर चला गया। फिर राहुल ने विनय से पूछा " यह अभी–अभी ऐसा हुआ है या फिर पहले से ही है।" विनय उसे समझाता हुआ बोला, " यह जब से इस सोसायटी में आया है, तब से यह ऐसा ही है। एक बार तो इसकी मम्मी ने इसे इस बात के लिए पीटा भी था। हुआ यूँ कि, इसकी मम्मी ठंड के दिनों में यहाँ मैदान में सभी औरतों के साथ बैठा करती थी। एक दिन संस्कार भी उनके साथ आया। अब तो रायता फैलना ही था, उस अर्थात् का। उसकी माँ ने सहेलियों से कहा कि उन्होंने आज नाश्ता नहीं किया।' क्योंकि उनका हाजमा ठीक नहीं था, संस्कार बीच में ही बोल पड़ा, "अर्थात् मम्मी का पेट खराब है।" अब तो उनकी सहेलियों ने जो ठहाके लगाने शुरू किये तो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहे थे। आँटी ने फिर कहा, " अरे यह मज़ाक कर रहा है। फिर बोला, "अर्थात् मम्मी झूठ कह रही है। उसकी माँ ने बात टालते हुए कहा, "ये सब छोड़ो अनीता तू यह बता कि तेरी खोयी हुए चप्पलें मिलीं कि नहीं? " संस्कार हमेशा की तरह फिर टपका, "अर्थात् वो चप्पलें मिलीं, जो मम्मी ने बॉथरूम में यूज़ के लिए चुरायी थीं।" अब तो उसे जो मार लगी यह वही बयाँ कर सकता है।" अब राहुल थोड़ा–थोड़ा समझ पा रहा था, उसने सबको अपने पास बुलाया और कहा, "मेरे पास एक आइडिया है। सुनो .....।" वाह! मज़ेदार आइडिया है। उससे संस्कार की अर्थात् कहने की आदत भी छूट जाएगी और नया साल भी खूब मनेगा।" विश्वास ने चहकते हुए कहा।

अगली सुबह क्लब के सारे मेम्बर गार्डेन में आ गये। सबसे पहले राहुल ने कहा, सबको हैप्पी न्यू ईयर अर्थात् नये साल की शुभकामनाएँ।" बारी–बारी सबने यही कहा। अकचकाते हुए संस्कार ने पूछा, "तुमलोग फिर से मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो अर्थात् मेरी बेईज्जती।" विनय ने भी कहा, " हम कहाँ तुम्हारा मज़ाक उड़ा रहे हैं, अर्थात् हमने तुम्हारी बेईज्जती नहीं की।" "अरे! अभी तो की, अर्थात् मेरी बेइज्जती।" संस्कार गुस्साया।

"नहीं–नहीं। हमने कहाँ की अर्थात् तुम्हारी बेईज्जती " राहुल बोला।

संस्कार अब इससे बहुत चिढ़ रहा था और चिढ़ते हुए उसने सबसे कहा, " अरे यार! यह क्या बकवास कर रहे हो अर्थात्.....।" बीच में ही संस्कार को रोकते हुए राहुल बोला, "बस यही 'अर्थात्' तो जड़ है। जैसे हम 'अर्थात्'–अर्थात्' कह रहे थे और तुम चिढ़ रहे थे, वैसे ही जब तुम कहते हो तब हम चिढ़ते हैं।" संस्कार अब अपने किये पर शर्मिन्दा हो रहा था। उसने सबसे माफी माँगी और कहा, आज न्यू ईयर के दिन में यह संकल्प लेता हूँ कि अब से मैं अर्थात्' नहीं बोलूँगा।" राहुल बीच में ही बोल पड़ा, " अर्थात् तुम्हारी बेइज्जत नहीं होगी। "सब जोर से हँस पड़े अर्थात् खुश हो गए।"

रौशन पाठक, वर्ग -IXth

सुबह के इंतजार में

इस अँधेरी रात में ठंड ने कब्जा कर रखा था। कुहासे ने भी अपना जाल बिछा दिया था और इस रात में ठंड इतनी थी कि शायद पानी और बर्फ में कोई अंतर नहीं। किसी की चूँ तक सुनाई नहीं देती। सिर्फ हवा फुसफुसाती रहती। तभी ठंड, हवा के पास आती है और कहती है– "अरे चल ना इस रात के चक्कर काटने और लोगों को डराने," ठंड धीरे से कहती है। हवा तो शैतान थी ही, वह चल पड़ी। "रुको" तभी पीछे से आवाज आती है। ठंड पीछे मुड़कर देखती है। यह कुहासा था जिसने कान लगाकर सारी बातें सुन ली थीं। "रुको मैं भी चलता हूँ।" हवा और ठंड ने 'हाँ' कर दी और तीनों चल पड़े। पहले इन्होंने सोचा कि आसमान में चलते हैं और चाँद को परेशान करते हैं। फिर तीनों चुपके से आसमान में पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि चाँद बंदर टोपी पहन रजाई में बैठा था। और तारे शॉल, कम्बल ओढ़े बैठे थे। हवा के तीन गिनते ही तीनों टूट पड़े। कुहासे ने जल्दी से अपना जाल फैलाया और फिर हवा और ठंड तेजी से दौड़े। अब डर के मारे चाँद रजाई में घुस गया। और ठंड ने उसकी टोपी खींच ली। हवा ने तो तारों के झोलों से अंडे गायब कर दिये और कुछ की रजाई–कम्बल खींच लिये । पर कुहासा अभी भी चाँद की रजाई खींच रहा था। पर चाँद खुद ठहरा जिद्दी छोड़ने का नाम न लेता। तभी वहाँ का सैनिक बादल वहाँ पहुँचता है और ये हालत देख जोर से गरजता है। फिर हवा को दूर से ही बिजली का झटका देता है। हवा अटका खाकर जमीन की ओर गिरती है। ठंड कुहासे के बीच छुपकर भाग जाती है और कुहासा दौड़कर भागता है। अब ठंड और कुहासा हवा के पास पहुँचते हैं। तभी हवा कहती है –"अरे! रे बड़ी जोर की लगी, इस बादल को तो, छोड़ो अब कहाँ चलना है।" "चलो यहीं सड़क पर, कुछ लोगों को डराते हैं" ठंड कहती है। अब सब लोग छिप गए। हवा एक पेड़ के पीछे, ठंड एक गली में और कुहासा सड़कों पर फैलकर, नजर रख रहा था। तभी कुहासा इशारा करता है कि दूर से कोई आ रहा है। तभी एक बाइक पर बैठा आदमी वहाँ से गुजरता है। फिर हवा चीखती हुई उसके पीछे दौड़ी, ठंड भी उसके साथ भागी। अब कुहासा भागने वाला ही था कि उसकी नजर पास की झोपड़ी में पड़ती है, जिसका दरवाजा नहीं था। वहाँ एक बच्चा अपनी माँ के साथ चादर ओढ़ कर सोया था। इतनी ठंड थी कि वह बच्चा रुक–रुक कर काँप ही जाता था। वह जब भी साँस छोड़ता हवा भाप की तरह लगती है और वह नींद में ही एक–दो बार मुस्कुरा उठता था। यह देख कुहासा वही रुक जाता है और यह महौल महसूस करता है। तभी हवा और ठंड वहाँ पहुँचते हैं। कुहासा उन्हें उस ओर इशारा करता है। तीनों अब उस ओर देखते हैं और उन्हें लगता है कि शायद अब शांत रहना चाहिए। तीनों वहाँ से हट जाते हैं। हवा एक कोने में बैठ जाती है। ठंड एक पेड़ के नीचे बैठ जाती है। और कुहासा चारों ओर की शान्ति देख, महसूस कर बीच चौराहे पर खड़ा हो जाता है। और सभी आसमान की ओर देखने लगते हैं, सुबह की इंतजार में.....।

युवराज, कक्षा–VII, एडिलेड कॉन्वेट

झरोखा

'नशा मुक्ति' दिवस के अवसर पर पेंटिंग प्रदर्शनी का अवलोकन करते माननीय मुख्य मंत्री

नाटक प्रस्तुत करते किलकारी के बच्चे

पटना पुस्तक मेला–2017 में किलकारी प्रकाशन स्टॉल

महान् विभूति

वॉल्ट डिजनी

क्या तुमने उस चूहे को देखा है जो बोलता है। और क्या उस बत्तख को जानते हो जिसे बक–बक करने की आदत है। ऐसे हँसोड़े किरदार तो हमें कार्टून की याद दिलाते हैं। अब कार्टून की दुनिया में तो तोंदू मेंढक, मोटू बिल्ला, कुछ भी हो सकता है। जिस तरह से डोरेमॉन और ऑगी है। पर पता है उस वक्त जब ये हसौड़े चरित्र नहीं थे, तब वॉल्ट डिजनी ने अपनी कहानी स्टीमबोट बिल्ली में मिकी मॉउस को बनाया। हाँ वही कार्टून वाला चूहा जिसके दो काले कान हैं। वॉल्ट डिजनी का जन्म पाँच दिसंबर 1901 को शिकागो में हुआ था। उनके पिता किसान थे। एक समय प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लेने के लिए वे सेना में भी भर्ती हुए और एंबुलेस ड्राइवर के रूप में काम किया। परंतु जल्द ही वे वापस आ गये और विज्ञापन कार्टून बनाने लगे। 1992 तक डिजनी ने एक दुकान खोल ली। पर्याप्त काम की कमी के कारण वे हॉलीवुड चले गए और कार्टून बनाने लगे। उनके अत्यधिक सराहे जाने वाले चरित्रों में मिकी माउस, मिनी मॉउस, डोनाल्ड डक, और गूफी हैं, जिनका उन्होंने अविष्कार किया था और जिन्होंने युवाओं और बुजुर्गो को उनका दीवाना बना दिया। वे अपनी लघु अवधि के कार्टूनों में बिलकुल अनूठे और नवीन प्रयोग करते हुए ध्वनि, संगीत और लोककथाएँ भी डाल देते थे। उन्होंने कई फीचर फिल्में भी बनायीं। 'स्नो व्हाइट' पिनोक्चिओ', 'बॉम्बी' आदि उनकी कुछ प्रसिद्ध कार्टून फिल्में हैं। उन्होंने प्रकाशन, विज्ञापन और उत्पाद के क्षेत्र में भी काम किया। जब वे बहुत समृद्ध और प्रसिद्ध हो गए थे तो वो अपने बच्चों को अक्सर पार्क घुमाने ले जाया करते थे। वहाँ वे बच्चों को खेलते हुए देखते तो मन में एक ऐसा पार्क बनाने का ख्याल आया जहाँ पूरा परिवार आनंद ले सके। तब उन्होंने कैलोफोर्निया राज्य के एनाहेम शहर में डिजनीलैंड बनाया। वे चाहते थे संसार सबके लिए एक बेहतर स्थान हो। उनके कार्य के लिए उन्हें कई आवार्ड भी मिल चुके हैं। डिजनी की मृत्यु 15 दिसंबर 1996 को लॉस एंजिलिस में हो गई। उनके हँसोड़े किरदार आज भी उनका व्यक्तित्त्व दर्शाते हैं।

अभिनंदन गोपाल

खोजबीन

भविष्य में इंसान अपने दाँत खुद उगा सकेगा

एक शोध में दावा किया गया है कि इंसान खुद अपने दाँतों को फिर से उगाने में सक्षम हो सकता है। शोध के अनुसार, दाँत उगाने की प्रक्रिया उसी तरह होगी जैसे मलावी झील में पायी जाने वाली सिक्लिड मछली अपने दाँत उगाती है। अटलांटा में जॉर्डिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिकों ने छोटी मछली के दाँतों और स्वाद ग्रंथियों की कोशिकाओं के रासायनिक परिवर्तन का अध्ययन किया। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि उनके शोध में मनुष्यों में दाँतों की फिर से उगने की प्रक्रिया में मदद मिलेगी। जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रोफेसर टॉड स्ट्रीलमैन ने बताया, हमने मछलियों के दाँतों और स्वाद ग्रंथियों के बीच विकासात्मक प्रकिया को खोज लिया है। अब हम कोशिकाओं में होने वाली उस प्रकिया को जानने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे दाँतों और संवेदी तंत्र का विकास होता है। सिक्लिड मछली और मनुष्यों में दाँतों और स्वाद ग्रंथियों का विकास एक ही तरह के सतही ऊतकों से होता है। स्ट्रीमलेन के नेतृत्व में शोधकर्त्ताओं ने चूहे और मछली के जीन में अंतर पर अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि दोनों में दाँतों और स्वाद ग्रंथियों के विकास के लिए एक से उत्तक पाये जाते हैं।

उदय, वर्ग VII, प्रेसीडेंसी स्कूल

हँसो हँसाओं

- बबली – (बबलू से) – स्कूल जाते हुए शेर के बच्चे रोते नहीं।
  बबलू – शेर के बच्चे स्कूल भी नहीं जाते।
- बबलू – मेरी चाय में मक्खी डूब कर मरी पड़ी है।
  बबली – तो क्या करूँ ? मैं ढाबा चलाऊँ या उन्हें तैरना सिखाऊँ।
- बबलू – चूहे मारने की दवाई देना।
  दुकानदार– घर लेकर जानी है ?
  बबलू – नहीं तो क्या चूहे यहीं लेकर आऊँ?
- बबलू – मुझे चार बजे जगा देना
  बबली – लेकिन मुझे टाइम देखना नहीं आता
  बबलू – तुम जगा देना। टाइम मैं खुद देख लूँगा।
- बबलू – तुम देश के लिए क्या करते हो?
  बबली – पानी की बचत करती हूँ। हफ्ते में सिर्फ एक बार नहाती हूँ।
- बबली – अमरूद खरीदा तो उसमें कीड़ा निकला
  बबलू – तुम तो किस्मत वाली हो, क्या पाता अगली बार इसमें से मोटर साइकिल निकल जाये।

चिट्ठी–पत्री

प्यारी खुशबू दीदी,

नमस्ते!

मैं यहाँ कुशलता पूर्वक हूँ। आशा करता हूँ आप भी कुशल होंगी। आज मैं बहुत खुश हूँ। आप जानना चाहेंगी न, मैं क्यों खुश हूँ? आज मैं किलकारी की ओर से सोनपुर गया। मेरे साथ और भी भाईया, दीदी थे। इससे पहले मैं कभी सोनपुर गया ही नहीं था। किलकारी से सुबह में गाड़ी खुली हमने बहुत मौज–मस्ती की। तीन–चार घंटे में एक मंदिर पहुँचे 'हरिहरनाथ मंदिर'। उस मंदिर में शिव और विष्णु जी मूर्ति थी। मैं वहाँ जल चढ़ाने गया। पंडित जी ने मुझे माला पहनायी। मैं बहुत खुश हुआ। फिर मैं दूसरे पंडित जी के पास गया। मेरे साथ और भी भईया थे। पंडित जी ने सबको धागे बाँधे और बोले यह मंदिर पूरे 14 हजार वर्ष पुराना है। जहाँ शिव और विष्णु की प्रतिमा एक साथ है। मैं यह सुनकर दंग रह गया। मैं क्या सारे भईया भी दंग रह गए।

उस मंदिर में पूजा करके गाड़ी पर बैठ गया और कुछ ही देर में गंडक नदी पहुँचा। सबसे पहले जाकर नाव पर सैर करने चला गया। मैंने नाव पर कभी सैर नहीं की थी बालू की रेत पर खूब खेला, दौड़ लगायी। मैं उस समय इतना खुश था, इतना कि बता भी नहीं सकता। नाव से सैर करके वहाँ भी एक छोटे से मंदिर में पूजा की। वहाँ एक सर ने कहानी सुनाई जो कुछ इस प्रकार थी। एक बार इस गंडक नदी में मगरमच्छ हाथी का पैर पकड़ कर चबाने लगा। हाथी ने विष्णु भगवान को याद किया। तभी विष्णु भगवान ने अपने चक्र से मगरमच्छ का गला काट दिया। उसके बाद हाथी ने विष्णु भगवान का पूजन किया। दीदी ने बताया यह कहानी गज–ग्रह की है। मुझे यह कहानी सुनकर मजा आया। मैंने इसी नदी की नाव से सैर की थी। अब हमलोग पहले वाले मंदिर के पास एक होटल में खाने गये। खाना में चूरा, दही और सब्जी था। सर ने सबको एक–एक पूड़ी दी। वो भी घर की बनी पूड़ी। सब लोग खाना खा लिए अब जाना था 'सोनपुर मेला, सब लोग गाड़ी पर बैठे। दस मिनट में सोनपुर पहुँचे वहाँ बहुत सारे झूले थे और खिलौने भी। वहाँ एक गली जैसा हाट था, जहाँ हर सामान 10 रुपये ही था। जो सामान सड़क पर बिक रहा था, वह बहुत महंगा था। वहाँ पर इतना सामान था कि क्या बताऊँ हमलोग एक बेड, सोफा की दुकान पर रुके हुए थे क्योंकि दो आदमी खो गए थे, वो भी किलकारी के थे। सभी लोग उन्हें ढूँढ़ने गए। जब दोनों भईया मिले तब हमलोग खरीदारी करने निकले। मैंने दो खिलौने खरीदे। मम्मी के लिए चूड़ियाँ खरीदीं आपके लिए बाला, पापा के लिए पेन और भईया के लिए खिलौना। फिर एक हॉल में गया, हॉल में भी बहुत कुछ बिक रहा था। वहाँ पर हमलोगों ने लिट्टी चोखा खाया। उसके बाद उसी हॉल में सब लोगों ने जूस पिया। फिर हमलोग ऐसी जगह गए जहाँ ट्रेनों के बारे में बताया जा रहा था। ट्रेन की मूर्ति भी थी। वहीं पर एक छोटी–सी–रेल चल रही थी। किलकारी वाले सर ने टिकट कटाए। उसके बाद हमलोग ट्रेन में बैठ गए। ट्रेन खुली। रेल चारों तरफ चक्कर लगाने लगी, बता दूँ कि वो ट्रेन सड़क पर चल रही थी। इसके बाद हमलोग लौटने के लिए गाड़ी पर बैठ गये। और हाँ, मैंने हर जगह फोटो खिंचवायीं सच में मुझे बहुत मजा आया। हमलोगों के साथ किलकारी के राजू भईया और ज्योति माँ भी गई थी। हमलोग दो विधा के बच्चे थे। कुछ लेखन विधा के बच्चे और कुछ फोटोग्राफी के बच्चे गए थे। अब हम सबकी यात्रा समाप्त हुई। जिस तरह सबको गाड़ी से यात्रा करवायी उसी तरह सबको उसी गाड़ी से घर भी छोड़ दिया। मै उस यात्रा को कभी नहीं भूलूँगा।

आपका प्रिय भाई
राज आर्यन

एक्सपोजर समूह के बच्चों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी

इस अंक के बाल रचनाकार- राज आर्यन, गौरव, श्रेया, प्राची, खुशबू, मो० असीम मन्नत, उदय, प्रियांशु, हर्षित, हर्ष, अर्पित

बाल सम्पादक मंडल- सम्राट, मुनटुन, प्रियंतरा, अभिनन्दन, प्रवीण, रौशन, युवराज

संयोजन- सुधीर कुमार

संपादक- ज्योति परिहार, निदेशक
बिहार बाल भवन किलकारी, पटना

हमारा पता

बिहार बाल भवन किलकारी, सैदपुर, पटना- 800 004

दूरभाष: 0612-2661211, 9835224919, 7463878822
ई-मेल: info@kilkaribihar.org
वेबसाइट: www.kilkaribihar.org
ब्लॉग : kilkaribihar.blogspot.in
फेसबुक: www.facebook.com/kilkaribihar
यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar

बच्चों द्वारा रचित, संपादित एवं बच्चों के लिए बाल मासिक अखबार। इस अखबार में छपी हुई रचनाएँ बच्चों के व्यक्तिगत विचार हैं। बच्चों के लिए समर्पित

ग्राफिक्स डिजाइन एवं मुद्रक- इंडियन आर्ट्स ऑफसेट, बेसमेंट, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महेन्द्रू, पटना-6, फोन : 0612- 2678074, मो० : 72578 87860

[No. G1 / Mail / Registration / Renewal / PT-73/2015]

नन्हें कलाकार

विवेक

राजीव रंजन

अनुराग

सपना
वर्ग-VII, हनी ड्यू प्वाइंट स्कूल

प्रिया, वर्ग - III

रिया, वर्ग - VII

कहानी

चिट्टू का घर

"सूरज दादा हैलो! कैसे हैं आप ?"

"कौन बोला भाई, "सूरज इधर–उधर देखने लगा, "दादा इधर! "पीपल के पेड़ के नीचे पगडंडी पर से हाथ हिलाता चिट्टू चूटा ने सूरज को इशारा किया "अरे चिट्टू हो, बोलो क्या बात है, " सूरज उसे देखकर बोला। "दादा आप तो दुनिया के कोने–कोने तक देखते हैं। जरा यह बताइये कि मेरे रहने लायक कौन–सी जगह सही है?" चिट्टू ने सूरज से सवाल किया। "तुम जहाँ रह रहे हो वही सही है। सूरज कहकर हँसा। " नहीं दादा मुझे और कहीं रहना है " " चिट्टू ने कहा। "तब ठीक है। देखो यहाँ से उत्तर दिशा में एक बड़ा और ऊँचा पहाड़ है। हर ओर हरियाली छायी है।" सूरज ने इधर –उधर देखने के बाद बताया। "लेकिन दादा उतनी दूर पहाड़ पर मैं जाऊँगा कैसे?" चिट्टू परेशान हो गया। "मेरे पास उपाय है न!" सूरज ने झट् से बताया। "क्या दादा?" पूछने में चिट्टू को देर न लगी। "मैं एक मंत्र देता हूँ। उसे बोलने पर तुम कहीं भी जा सकते हो। लेकिन मात्र दो ही बार । वो मंत्र है– सूर्य मंत्रम्, 'सूर्य मंत्रम् ले चल पहाड़ी पर' ऐसा बोल तुम जा सकते हो।" सूरज ने जाने का मंत्र दिया। "दादा आपका बहुत–बहुत धन्यवाद! मैं अभी जाता हूँ।" चिट्टू ने मंत्र पढ़ा, "सूर्य मंत्रम्, सूर्य मंत्रम् ले चल पहाड़ी पर।" मंत्र पढ़ते ही वह पहुँच गया। "अहा! कितनी प्यारी जगह है, ये हरी –हरी घास, चमकता हुआ फूल, वाह! मजा आ गया।" कहकर वह घूमने लगा। उसे वह जगह पसंद आ गयी। उसने वहीं रहने के लिए सोच लिया। फिर रहने लगा। उसे आज यहाँ आये हुए कई दिन हो गये। उसने पहाड़ी पर ढेर सारे दोस्त बनाए। सारे दोस्तों से यह अलग था। उन सबका रंग नीला था और चिट्टू का रंग काला था। वहाँ के सारे चूटे–चीटियाँ इस कारण से और भी चाहते थे। चिट्टू भी सबको चाहता और उसे जब पुराने दोस्तो की याद आती तो वह मोइबाइल–फोन से बात कर लिया करता था। "अरे चिट्टू कैसे हो? अपने नये घर में।" उसे देख सूरज ने सवाल किया। "जी दादा बहुत बढ़िया। आप बताइये?" चिट्टू ने भी उनका हाल लिया। दोनों में बहुत सारी बातें हुईं। फिर सूरज अपने काम में लग गया। फिर सूरज ने आगे कहा, " जब भी मेरी जरूरत हो बुला लेना।" कहकर वह चला गया। चिट्टू मुस्कुरा पड़ा।

एक दिन चिट्टू फूलों पर टहल रहा था। सारे फूल सूरज के हल्की किरणों में चमक रहे थे। चिट्टू मस्ती से फूलों का रस पीता टहल रहा था। उसकी दोस्ती कई तितलियों से भी हुई थी। चलते–चलते चिट्टू ने अपने–आप से बोला, "यहाँ मैं बहुत खुश हूँ। आसानी से खाना–पानी भी मिल जाता है किसी से कोई डर भी नहीं है। जहाँ मैं रहता था, वहाँ तो भोजन की तालाश डर कर करनी पड़ती थी कई सारे राक्षसों से बचकर रहना पड़ता था। कई बार तो मैं गिरगिट से बचा भी, यहाँ मैं बहुत अच्छे से रह रहा हूँ। मैं हमेशा यहीं रहूँगा।' अपने–आप से बातें करते वह चल रहा था। "अरे यह क्या?" अचानक चिट्टू रुका। उसके हाथ–पैर काँपने लगे। दाँत किटकिटाने लगे। सामने बड़ा–सा गिरगिट था। अब यह क्या? वह सोच में पड़ गया। अचानक उसे याद आया सूर्य का मंत्र। उसने एक ही बार प्रयोग किया था एक बार वह और प्रयोग कर सकता है। फिर वह मुस्कुरा पड़ा। यह देख गिरगिट को आश्चर्य हुआ, 'अरे कैसा बेवकूफ है, मैं इसे खाने वाला हूँ और यह हँस रहा है। लगता मुझसे इसे डर नहीं। रुक अभी बताता हूँ। गिरगिट मन–ही–मन सोचते उसपर झपटा। चिट्टू मंत्र पढ़ रहा था, "सूर्य मंत्रम्, सूर्य मंत्रम् पहुँचा मुझे अपने घर।" चिट्टू गायब हो गया। गिरगिट गिरा धड़ाम्! "अरे कहाँ गया?" वह उसे वहाँ ढूँढ़ने लगा। इधर चिट्टू अपने घर पहुँच उछल–उछल कर नाच रहा था, "नहीं! जो भी हो, अपना ही घर प्यारा है।

प्रवीण कुमार

जब गए सोनपुर की अंदर

मन्दिर था कितना वो बड़ा
गज–ग्रह के था चंगुल में पड़ा
थी कलकल करती वो नदी
कहते हैं जिसे नारायणी
जब नइया इत–उत डोलती
लहरें हमसे कुछ बोलतीं
इतनी श्रद्धा थी लोगों में
बस राम नाम था बोलों में
बाजार लगा था इतना बड़ा
थी बरफी, खजूरी झोलों में
कुछ रेल थे कुछ खेल थे
कुछ झूले कहीं पर भेल थे
थी खट–खट करती लकड़ी
लकड़ी की बनी थी बकरी
घोड़े देखे उतने सुन्दर
जब गए सोनपुर के अन्दर।

प्राची प्रियदर्शी 9th

जाड़े का मौसम

जाड़े का मौसम आया,
कम्बल मैं घुसकर पिज्जा खाया।
गरम –गरम वह पिज्जा था,
मुँह में डाला पेट में डिलेवरी।
कम्बल में घुसकर कार्टून देखा,
मजा उठाया।
मस्ती आयी उमंग छाया
जाड़े का मौसम आया।

हर्षित, वर्ग -IV
एडिलेड कान्वेंट स्कूल

सर्दी आई

सर्दी आई, सर्दी आई
संग में ठंडी, बर्फ भी लाई।
सर्दी आई बढ़ गई मुश्किल,
सूरज दादा क्यों बने हो बुजदिल।
गर्मी में तो आग उगलते,
क्यों हार गए हो सर्दी के चलते।
अब क्यों हारकर छिप के रोते,
तुम्हारे चलते हम देर तक सोते।
सर्दी आई, सर्दी आई,
बंद है आईसक्रीम और मलाई,
हर घर में निकली गर्म रजाई,
चिपक के सोए सिक्ख इसाई,
बन गए दुश्मन भाई–भाई,
सर्दी आई, सर्दी आई।
गंगा है भारत की शान,
नहीं है तट पर कहीं भी जाम।
ठंड में न कोई छुए पानी,
जो भी छुए याद आ जाए नानी,
नहीं सूझेगी कोई शैतानी।
सर्दी आई सर्दी आई,
संग में ठंडी बर्फ भी लाई।

शुभम् कुमार
वर्ग -V

खेलें खेल – क्या बनोगे.....क्या बनोगे

'आओ दोस्तो एक खेल–खेलते हैं। खेल का नाम है, "क्या–क्या बनोगे"? इस खेल में जितने चाहें , उतने बच्चे गोल घेरे में खड़े होंगे। खेल–खेलाने वाला पूछेगा "क्या बनोगे–क्या बनोगे"? सभी बच्चे गोल घेरे में घूमते हुए बोलेंगे–" आप जो चाहें वही बनेंगे।" खेल–खेलाने वाला कहेगा–"हाथी" तो सभी बच्चे हाथी बनेंगे और हाथी की तरह अभिनय करेंगे। इसी तरह से अलग–अलग जानवर , पक्षी या वस्तु के नाम लेकर खेल चलता रहेगा। है न मजेदार खेल। तो देर किस बात की। चलो खेलते हैं। "क्या बनोगे–क्या बनोगे?

सुधीर भईया

नव वर्ष का अभिनंदन

नव वर्ष में नई किरण आएगी
फिर से रौशनी बरसाएगी
फिर से दीपक जगमगाएगा
नववर्ष की जब खुशी आएगी।

फिर से शुरू करेंगे जीवन
सुखी, सुरक्षित और मनमोहन
प्रेम, भाव और अपनेपन से
करेंगे नववर्ष का अभिनंदन।
नयी दुनिया के बनेंगे दर्जी

ना चलेगी अब बदमर्जी
अब ना होगी कोई खुदगर्जी
लगेगी अब नववर्ष की अर्जी।
ना कोई झूठ, फरेब चलेगा
जीवन में ना ऐब चलेगा
भूख से ना कोई मरेगा
नववर्ष में सब सुधरेगा।।

प्रियांशु
वर्ग : IX
संत कोलम्बस हाई स्कूल

कुछ तो लोग कहेंगे–

एक आदमी और औरत बैल पर चढ़कर कहीं जा रहे थे। लोग बोलने लगे, देखो, एक बैल पर दो–दो जा रहे हैं। बेचारे बैल की परवाह नहीं है इनको। यह सुनकर आदमी उतर गया, औरत बैल पर सवार रही। फिर लोग हँसने लगे कि देखो, बेचारा आदमी चल रहा है और औरत मजे से ऊपर बैठी है। तो औरत उतर आयी और आदमी बैठ गया। लोग फिर हँसने लगे तो आदमी और औरत दोनों बैल के ऊपर यह कहते हुए बैठ गये कि लोगों की बातों में नहीं आना चाहिए। उन्हें तो हर हालत में बिना सोचे–समझे कुछ भी कहने से मतलब है।

बूझो बुझौवल

- रंग है मेरा काला
  उजाले में दिखाई देती हूँ
  अँधेरे में छिप जाती हूँ

- गोल–गोल आँखों वाला,
  लंबे–लंबे कानों वाला।
  गाजर खूब खाने वाला,
  इसका नाम बताओ लाला

- ना कभी किसी से किया झगड़ा
  ना कभी करी लड़ाई
  फिर भी होती रोज पिटाई

- ना मुझे इंजन की जरूरत,
  न मुझे पेट्रोल की जरूरत।
  जल्दी – जल्दी पैर चलाओ,
  मंजिल अपनी पहुँच जाओ।

- गोल–गोल घूमता जाऊँ
  ठंड देना मेरा काम
  गर्मी में आता हूँ काम

- पैसा खूब लुटाती हूँ
  घर–घर पूजी जाती हूँ
  मेरे बिना बने ना काम
  बताओ बच्चो मेरा नाम ?